खण्ड 3 अंक 2 जुलाई–सितम्बर, 2026

राज्य स्तरीय माँ शूलिनी मेले में नौणी विश्वविद्यालय की सहभागिता

राज्य स्तरीय शूलिनी मेला हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 26 से 28 जून, 2026 को सोलन के ठोडो ग्राउंड में पूरे धार्मिक और सांस्कृतिक उत्साह के साथ आयोजित किया गया। यह मेला मां शूलिनी देवी की शोभा यात्रा, साँस्कृतिक कार्यक्रमों, स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी और पारंपरिक खेलों के लिए प्रसिद्ध है। मेले में पारंपरिक ग्रामीण खेलों का आयोजन व विभागीय प्रदर्शनियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। इस अवसर पर विस्तार शिक्षा निदेशालय, डॉ यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी ने भी अपनी एक प्रदर्शनी लगाई। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों ने प्रदर्शनी में भाग लिया और अपनी नवीनतम तकनीकों, उत्पादों और शोध कार्यों का प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनी का शुभारम्भ हिमाचल सरकार में माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ (कर्नल) धनीराम शांडिल ने 26 जून, 2026 की शाम को किया। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण वहां पर रखे सेब, आड़ू, प्लम, कीवी, आम, अंजीर, ब्लूबेरी, फालसा, आदि फलों की उन्नत किस्में रही। सजावटी फूलों की किस्में (गुलाब, कारनेशन, जरबेरा), कट–फ्लावर तकनीक, फूलों की सजावट के नमूने, फूलों से बने उत्पाद जैसे की गुलाल, इत्र इत्यादि भी किसानों को बहुत पसंद आए। प्रदर्शनी में आने वाले किसान बागवान एवं अन्य सभी आगंतुकों के सवालों का विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया एवं उनकी समस्याओं का समाधान किया।

विस्तार शिक्षा निदेशालय
डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी–सोलन, हिमाचल प्रदेश

विश्वविद्यालय के उत्पाद जैसे शहद, पेय पदार्थ और बीज भी प्रदर्शनी का एक मुख्य आकर्षण रहे और आम जनमानस में उनको देखने और खरीदनें में बहुत रूचि दिखाई।

इस पूरी प्रदर्शनी का समन्वय निदेशालय विस्तार शिक्षा द्वारा किया गया। उन्होंने विभिन्न विभागों के बीच तालमेल स्थापित कर मेले में विश्वविद्यालय की उपस्थिति को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया।

शूलिनी मेले में विश्वविद्यालय की भागीदारी अत्यंत सफल रही। हजारों लोगों ने प्रदर्शनी का भ्रमण कर विभिन्न कृषि व वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी प्राप्त की। इस प्रयास ने न केवल ग्रामीण समुदाय में जागरूकता फैलाने में सहायता की अपितु, विश्वविद्यालय की सामाजिक सहभागिता को भी मजबूत किया।

बागवानी सम्बन्धित जुलाई से सितम्बर माह की कार्यसारणी

शीतोष्ण फल पौधों में मल्च को तौलियों से हटाने का काम मौनसून से पूर्व ही पूरा कर लें। निचले मध्यवर्ती शीतोष्ण क्षेत्रों में सेब की अगेती किस्मों की तुड़ाई करें व मुख्य किस्मों रॉयल डिलिशियस की तुड़ाई भी तैयार होते ही आरम्भ कर लें। तौलियों में बरसात का पानी न टिके, इसके लिए पानी के निकास के लिए नालियां खोद लें। सेब के पौधों की अधिक फल से लदी हुई शाखाओं को लकड़ी के डण्डे या रस्सी से सहारा दें, यदि ओलों के लिए जालियां लगाई हों, तो उन्हें उतार लें। जुलाई में पेड़ों के अंदर उगने वाले अनचाहे और सीधे खड़े वॉटर स्प्राउट्स (जल शाखाओं) को काट दें। इससे सेब को बेहतर धूप और हवा मिलती है जिससे फल का रंग अच्छा आता है। सेब के अधिक उत्पादन वाले बागीचों में एक प्रतिशत यूरिया (2 कि.ग्रा./200 लीटर पानी) का छिड़काव फल तुड़ाई के तुरन्त बाद करें। फलों की अच्छी भण्डारण क्षमता के लिए फल तुड़ाई से 45 और 30 दिन पूर्व कैल्शियम क्लोराइड का 0.5 प्रतिशत (1 कि.ग्रा./200 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। सेब के पौधों में पोषक तत्वों की जांच के लिये जुलाई के मध्य से अगस्त के मध्य तक पत्तियों के नमूने लेना सबसे उपयुक्त समय है। वर्तमान वर्ष की वृद्धि (cument seasons shoot) के मध्य भाग से पूर्ण विकसित एवं स्वस्थ पत्तियों को पेड़ की चारों दिशाओं से सुबह या शाम के समय लें तथा पत्तियों को साफ कागज के लिफाफे या पेपर बैग में रखें और जल्द से जल्द प्रयोगशाला भेजें।

सदाबहार फल पौधों से मल्च को हटाने का काम आरम्भ करें। तौलियों में हल्की गुड़ाई कर खरपतवार मुक्त रखें तथा तौलियों से मौनसून के पानी के निकास का उचित प्रबंध करें। सदाबहार फल पौधों को वर्षा ऋतु के साथ ही लगाने का कार्य प्रारम्भ करें। लीची के पौधों में गुट्टी बाँधे।

मध्यवर्ती क्षेत्रों में सेब के फलों का तुड़ान करके ग्रेडिंग पैकिंग आदि कर मण्डियों में भेजें। अखरोट व पीकन नट में पैच व ऐनूलर चश्मा विधि से प्रवर्धन करें। किवी व अनार की कलमें लगाएं व किवी की पौध को सीड बैड से नर्सरी बैड में रोपित करें।

आम में साईड विनियर ग्राफ्टिंग व लीची, अमरूद में एयर लेयरिंग (गुट्टी) करें। आम की गुठलियों को इक्ट्ठा कर बुआई करें तथा सदाबहार फल पौधों की नर्सरी को निकाल कर बेचने का काम शुरू करें। तौलियों से जल निकासी का यदि प्रबन्ध न किया हो तो शीघ्र नालियाँ आदि बना लें।

ऊँचे क्षेत्रों में नाशपाती की अगेती किस्मों की तुड़ाई करें। गिरे हुए फल व पत्तियों को इक्ट्ठा कर गोबर के गड्ढों में डालें या नष्ट कर दें तथा फल पौधों की नर्सरी से समय–समय पर खरपतवार निकालते रहें।

नींबू प्रजाति के फल पौधों में सूक्ष्म तत्वों विशेष रूप से जस्ते की कमी को पूरा करने के लिए 1.0 किलो जिंक सल्फेट +500 ग्राम अनबुझा चूना 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। ऊँचे शुष्क क्षेत्रों में पकी हुई खुमानियों को धूप में या सन ड्रायर में सुखायें। अखरोट में साईड विनियर या चिप बडिंग का कार्य करें। नींबू प्रजातियों में चश्मा चढ़ायें व आम में कलम करें। फल पौधों में शाखाओं को सहारा देने के लिए उपयोग किये गये डण्डों व रस्सियों को हटा कर सुरक्षित रख लें।

जुलाई से सितम्बर का समय वर्षा, फल विकास तथा तुड़ाई का महत्वपूर्ण समय होता है। इस अवधि में जल निकास, पौध संरक्षण, पोषण प्रबन्धन और समय पर तुड़ाई से फलों की गुणवत्ता एवं उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

सब्जी की फसलों की कार्य रूपरेखा

टमाटर में फल सड़न रोकने के लिए जमीन से 15–20 सैं.मी. ऊँचाई तक स्वस्थ तथा पीले पत्तों को निकाल दें तथा पौधों पर मैन्कोजेब 250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल का 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। शिमला मिर्च तथा कड़वी मिर्च में फल सड़न तथा पत्तों का झुलसा रोग रोकने के लिए 7–10 दिनों के अन्तराल पर बोर्डो मिश्रण 0.8 प्रतिशत (800 ग्राम नीला थोथा + 800 ग्राम अनबुझा चूना + 100 लीटर पानी) या ब्लाईटॉक्स या मासटॉक्स (300 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। अदरक में नत्रजन की दूसरी मात्रा खड़ी फसल में डालें। फ्रासबीन की बुआई (कन्टेन्डर/प्रीमियर/वी एल बौनी–7) 45×15 सैं.मी. की दूरी पर करें। मूली, शलगम तथा गाजर की बीजाई 30×10 सैं.मी. की दूरी पर करें। बन्दगोभी की 45×45 सैं.मी. व गांठगोभी 30×20 सैं.मी. की दूरी पर तैयार पनीरी की रोपाई करें। पछेती फूलगोभी (पूसा स्नोवॉल–1, पूसा स्नोवॉल के–1) तथा गोभीवर्गीय परिवार की बीज वाली फसल की पनीरी तैयार करें। बीज को 30 मिनट के लिए गर्म पानी (52° सेल्सियस तापमान) में उपचार करें। यह विधि केवल विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में हो सकती है, किसान घर में नहीं कर सकता। टमाटर का पछेता झुलसा रोग रोकने के लिए मैन्कोजेब (250 ग्राम/100 लीटर पानी) या ब्लाईटॉक्स/मासटॉक्स (300 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

फूलों में होने वाले कार्य

गुलदाऊदी का पौधरोपण तथा पिंचिंग, गैंदे की पौध तैयार करना और पौधरोपण करना खासतौर पर मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में एवं गुलाब का पौधरोपण करें। गैंदे की पौध तैयार करना और पौधरोपण करना एवं गर्मियों वाले मौसमी फूलों के बीज एकत्रित करें। खासतौर पर कम पहाड़ी क्षेत्रों में गैंदे की पौध तैयार करें और पौधरोपण करें, सर्दियों वाले मौसमी फूलों की पौध तैयार करें तथा गुलदाऊदी के पौधों को सहारा व खाद पानी दें।

गैंदे की पौध तैयार करना

फल–सब्जी परिरक्षण हेतु कार्य

जुलाई माह में आड़ू, नाशपाती तथा आम जैसे मौसमी फलों से जैम, मुरब्बा, जैली, चटनी एवं अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करे। आम से अचार एवं आम पापड़, जबकि प्लम से कैंडी, स्क्वैश एवं एपेटाइजर बनाएं। मशरूम के संरक्षण एवं प्रसंस्करण हेतु ऑस्मोड्राइड उत्पाद तैयार करें तथा मशरूम पाउडर का उपयोग कर इंस्टेंट सूप मिक्स जैसे उत्पाद विकसित किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त खुमानी के संरक्षित गूदे से स्क्वैश एवं पापड़ तैयार करें। करेले एवं खीरे का अचार बनाएं।

अगस्त माह के दौरान सेब के गूदे का संरक्षण किया जा सकता है तथा उससे विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करें। अमरूद एवं सेब

से जैम, जैली तथा अन्य प्रसंस्कृत उत्पाद बनाएं। नाशपाती से जैम, चटनी एवं पेय पदार्थ तैयार करें तथा पत्थर नाख से कैंडी तथा अनार से रेडी–टू–सर्व पेय पदार्थ बनाएं।

सितम्बर माह में आलू से अचार एवं चिप्स तैयार करें। जंगली अनार (दाड़ू) को सुखाकर अनारदाना एवं पाउडर बनाएं। सेब को सुखाकर गोलाकार फाँकें तैयार करें तथा सूखे सेब के पाउडर का उपयोग कर बिस्कुट एवं अन्य बेकरी उत्पाद बनाएं। कद्दू से स्प्रैड, जैम, कैंडी एवं टूटी–फ्रूटी तैयार करें तथा अन्य फलों के साथ मिश्रित कर पौष्टिक पेय पदार्थ विकसित करें। इन गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय कृषि एवं बागवानी उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर अतिरिक्त आय एवं स्वरोजगार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं।

बीज उत्पादन सम्बन्धित कार्य

जुलाई

- मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में बीज फसलों के लिए टमाटर तथा शिमला मिर्च के फल सड़न रोग तथा पत्ता धब्बा रोग के रोकथाम के लिए डाइथेन एम–45 या मास एम–45 (250 ग्राम/100 लीटर पानी) या ब्लाईटॉक्स/मास्टॉक्स (300 ग्राम/100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- टमाटर के फल छेदक कीड़े का नियंत्रण करने के लिए संक्रमित फलों और बड़े हुई सुंडियों (लार्वा) को इक्ट्ठा करके नष्ट कर दें। पैकेज ऑफ प्रैक्टेसिस के अनुशंसित कीटनाशकों का उपयोग करें।
- टमाटर, शिमला मिर्च, कड़वी मिर्ची, बैंगन तथा खीरे में नाइट्रोजन खाद (10 कि.ग्रा./बीघा) की मात्रा डालें।

अगस्त

- निचले पर्वतीय क्षेत्रों में बीज के लिए अदरक मे 5.4 कि.ग्रा नाइट्रोजन/बीघा की दूसरी मात्रा फसल में डालें।
- अदरक की बीज फसल में निराई करें।
- मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में बीज फसल के लिए टमाटर में फल सड़न रोग के लिए ज़मीन से (15–20 सैं.मी.) ऊँचाई तक स्वस्थ तथा पीले पत्तों को निकल दें और पौधों पर मैन्कोजेब (250 ग्राम) प्रति 100 लीटर पानी के घोल में मिलाकर 8–10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में बीज फसल के लिए शिमला मिर्च तथा कड़वी मिर्च में सड़न तथा

पत्तों का झुलसा रोग के लिए 7–10 दिन के अंतराल पर बोर्डो मिश्रण 0.8 प्रतिशत (800 ग्राम नीला थोथा + 800 ग्राम अनबूझा चूना + 100 लीटर पानी) या ब्लाईटॉक्स या मासटॉक्स (300 ग्राम/ 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

- मेथी और पालक की बीज फसलों की बुवाई करें ।

सितम्बर

- मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में बीज फसलों के लिए पछेती फूलगोभी (पूसा स्नोवॉल –1, के –1) तथा गोभीवर्गीय परिवार की बीज वाली फसल की पौध/पनीरी को उपचारित किए गए बीज से तैयार करें।
- टमाटर में पछेता झुलसा रोग की रोकथाम के लिए डाइथेन एम–45 या मास एम–45 (250 ग्राम/100 लीटर पानी) या ब्लाईटॉक्स/ मास्टॉक्स (300 ग्राम/100 लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करें ।
- गेंदे का फूल एंटीराईनम, कैलेंडुला, वार्षिक गुलदाउदी, पैंज़ी, डेज़ी, पॉपी, मीठी मटर की फसलों के बीज निचले पर्वतीय क्षेत्रों में बोएँ।
- बीज फसल के लिए गैंदे के फूल की पौध की रोपण दूरी (लंबा समूह– 30 X 30 सें. मी. मध्यम समूह–20 X 20 सें. मी. बौनी समूह 15 X 15 सें. मी.) रखें।
- मध्यवर्ती एवं ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में मूली तथा शलगम की बुवाई करें, ताकि बीज उत्पादन के लिए जड़ें सर्दियों के आगमन से पहले तैयार हो जाएँ।

सब्जियों के कीट एवं प्रबन्धन

टमाटर फल छेदक

फूल आने पर बैसिलस थूरीनजिंयसिस 0.5 लीटर/हैक्टेयर (70 मिलीलीटर को 100 लीटर पानी में मिश्रित घोल का छिडक़ाव करें।

फल मक्खी

गिरे हुए फलों को खेत से उठा कर गड्ढे में दबाएं। ये कार्य प्रति 10 दिन के अंतराल पर दोहराएं। डेढ़ मीटर की ऊँचाई पर 12 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लटकाएं तथा हर 15 दिन के बाद फंसी हुई मक्खियों का हटाकर ट्रैप को वापिस लटकाएं।

तना और फल छेदक

बैंगन पर फेनवेलरेट 20% ई.सी./0.5 मिली/1 लीटर का छिड़काव करें।

जैसिडः भिंडी की खड़ी फसल पर जैसिड के दिखाई देते ही थियामेथोक्साम 35 ग्राम (थियामेथोक्साम 25 डब्लयु डी) या ईमिडाक्लोपरिड 30 ग्राम (70 डब्लयु डी) का 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मधुमक्खीपालन

बरसात में लगातार बारिश होने के कारण मधुमक्खियां घर से बाहर नहीं जा पाती हैं। कभी–कभी लगातार बारिश के कारण मधुमक्खियां लम्बे समय तक अपने छत्तों तक ही सीमित रहती हैं और उनमें दस्त रोग विकसित हो सकता है। कमजोर कॉलोनियों को रानी वाली मजबूत कॉलोनियों के साथ मिला दें। यदि मधुमक्खियों के पास उचित भोजन भंडार नहीं है तो चीनी के घोल के रूप में उन्हें भोजन दें। मोम कीट, रेंगल और ततैया जैसे दुश्मनों के हमले पर नजर रखें।

सेब के कीटों का प्रबंधन

पत्ते एवं फल खाने वाले भृंगः व्यस्क भृंगों का प्रबंधन उन्हें एकत्रित करने के बाद नष्ट करके किया जा सकता है। व्यस्क भृंग आमतौर पर रात 8 बजे के बाद पत्तियों और फलों को खाने के लिए आते हैं। पेड़ के नीचे कपड़ा बिछाकर तथा शाखाओं को हिलाकर भृंगों को इकट्ठा किया जा सकता है। भृंगों को केरोसिन (5 प्रतिशत) मिश्रित पानी में डुबोकर नष्ट करें या मार दें।

व्यस्क भृंगों को आकर्षित करने और मारने के लिए लाइट ट्रैप का भी उपयोग किया जा सकता है। अधिक संख्या में भृंगों को आकर्षित करने के लिए इन लाइट ट्रैप को खुले क्षेत्रों में लगाया जाना चाहिए। बीटल संग्रहण के लिए सामूहिक

अभियान शुरू किया जाना चाहिए।

बीटल लार्वा (ग्रब) के खिलाफ जैव नियंत्रण का उपयोग फायदेमंद हो सकता है। *मेटारिजियम एनिसोप्लिए* और *ब्यूवेरिया बेसियाना* को गोबर की खाद के साथ मिलाकर इस्तेमाल किया जा सकता है। एंटोमोपैथोजेनिक नेमाटोड जैसे हेटेरोरहैबडेटिस इंडिका और हेटेरोरहैबडेटिस बैक्टीरियोफोरा को भी मिट्टी में डाला जा सकता है।

जड़ छेदक

जून–अगस्त तक व्यस्क कीटों को लाइट ट्रेप लगा कर पकड़ें और मार दें। तौलिया बनाते समय यदि जड़ छेदक कीट के शिशु मिलें तो उन्हें नष्ट कर दें। मेटारिजियम एनिसोप्लिए को गोबर की खाद के साथ मिलाकर पौधों के तौलिये में डालकर लार्वा का उपचार किया जा सकता है।

आड़ू एवं गुठलीदार फल

पीच फ्रूट फलाई: फल समय पर तोड़े। गिरे हुए फलों को नष्ट कर दें। जल्दी पकने वाली किस्में लगाएं। आड़ू के पेड़ों पर डेढ़ मीटर की ऊँचाई पर 12 फीरोमोन ट्रैप प्रति हैक्टेयर की दर से लटकाएं तथा हर 15 दिन के बाद फंसी हुई मक्खियों को हटाकर ट्रैप को वापिस लटकाएं।

पादप रोग सम्बन्धित कार्य

1. टमाटर व शिमला मिर्च की फसलों में घास न उगने दें।
2. पौधों के निचले हिस्से के 10–15 सैं.मी. पत्तों को निकाल दें।
3. पछेता झुलसा रोग की रोकथाम हेतु रिडोमिल गोल्ड (3 ग्राम प्रति लीटर) अथवा बोर्डो मिक्सचर (3 ग्राम प्रति लीटर) का छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें।
4. जिन क्षेत्रों में सेब की गुठलीदार फसल का तुड़ान हो गया हो, वो नीचे गिरे हुए फल व पत्तों को जला दें।
5. मारसोनिना या स्कैब के धब्बे दिखने पर मेटिराम (600 ग्राम 200 लीटर या मैंकोजेब व पैराक्लोस्ट्रोबिन (700 ग्राम 200 लीटर का छिड़काव करें।
6. स्कैब संभावित क्षेत्रों में दो छिड़काव की अवधि 12–14 दिनों की रखें।

जुलाई से सितम्बर माह के दौरान हिमाचल प्रदेश की जलवायु मिल्की मशरूम तथा उच्च तापमान सहनशील ऑयस्टर मशरूम (*Pleurotus sajorcaju, P pulmonaris, Pleurotus djamor*) प्रजातियों के उत्पादन के लिए अनुकूल रहती है। इस अवधि में किसान आगामी बटन मशरूम सीजन की तैयारी भी कर सकते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले स्पॉन एवं अन्य आवश्यक सामग्री का अग्रिम प्रबंध सुनिश्चित करें। स्वच्छता, तापमान, नमी तथा वायु संचार का उचित प्रबंधन अपनाकर किसान अधिक उत्पादन एवं गुणवत्तायुक्त मशरूम प्राप्त कर सकते हैं। किसानों के लिए यह सलाह मौनसून के दौरान मशरूम उत्पादन को सफल एवं लाभकारी बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

औषधीय व सुगंधित पौधों से सम्बन्धित कार्य

जुलाई के महीने में नर्सरी द्वारा तैयार किए गए पौधों का खेतों में प्रत्यारोपण किया जाता है। कुछ औषधीय पौधे जैसे कि कालीजीरी, अश्वगंधा, भंगजीरी तथा भृंगराज आदि की बरसात के मौसम में सीधी बिजाई बीजों को छिटक कर भी खेतों में की जाती है।

जड़ों / सर्कर / खर / स्टोलन / कंद / प्रकंद द्वारा उगाए जाने वाले औषधीयएवं सुगंधित पौधे जैसे कि पुदीना, बाम, थाईम, ब्राह्मी तथा बच

आदि पौधों को वर्षा ऋतु में जड़ सहित निकालकर खेतों में उचित दूरी पर लगाया जाता है। बसंत ऋतु में रोपित किए गए पौधों की निराई–गुड़ाई की जाती है। कुछ औषधीय पौधे जैसे कि ग्लोरि लीलि (*Gloriosa superba*) में अगस्त से सितम्बर महीने में पोलीनेशन तकनीक (परागीकरण) द्वारा इसके बीज उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। फूल खिलने के बाद एक दिन तक परागंण किया जाना चाहिए। वर्तिकाग्र ग्रहणशीलता की पहचान फूल के रंग के आधार पर की जाती है जिसमें सबसे ऊपर लाल, बीच में पीला व निचले भाग में हरा रंग हो। जंगली गैंदा (*Tagetes minuta*) के पौधों में जब 1 से 1.5 फुट ऊंचाई हो जाए तब इसके मुख्य तने को ऊपर से तोड़ देना चाहिए ताकि अच्छी उपज की प्राप्ति हेतु पौधे में बहुत शाखायें निकल सकें। बरसात के मौसम में कौंच के बीजों को पॉलीबैग में तथा पेड़ों के पास सीधे तौर पर बिजाई की जाती है।

सितंबर माह में सुगंधित पौधों की कटाई एवं तेल निकालने की प्रक्रिया की जाती है जैसे जंगली गेंदा, बाम, पुदीना, नींबू घास, खस घास आदि।

कृषिवानिकी पौधों में होने वाले कार्य

हिमाचल प्रदेश में जुलाई–सितंबर तक मानसून का मौसम रहता है। जुलाई माह को वन महोत्सव (वृक्षारोपण) के रूप में मनाया जाता है, इस अवधि के दौरान अधिकांश वन/कृषि वानिकी वृक्ष प्रजातियों का रोपण किया जाता है। इस अवधि के दौरान लगाए जाने वाली वृक्ष प्रजातियाँ हैं–ब्यूल, मोरस, शीशम, कचनार, तूना, सागवान, घमर, खैर, नीम, अरधु, कदंब, आंवला, अंजन, चंदन, हरड़, बेहड़ा, साल आदि। किसान कृषि वानिकी मॉडल अपनाकर आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित कर सकते हैं। जुलाई महीने में कृषि वानिकी मॉडल में मक्का, राजमा, सोयाबीन, उड़द तथा सब्जियां आदि खरीफ फसलों की बुवाई पूर्ण करें ।

जुलाई से सितंबर के दौरान वन रोपण गतिविधियां मुख्य रूप से साइट की तैयारी, पौधे लगाने और रोपण के बाद देखभाल पर केंद्रित होती हैं। अंतराल उच्च घनत्व से निम्न घनत्व तक भिन्न हो सकता है, अर्थात 1 मीटर × 1 मीटर से 5 मीटर × 5 मीटर तक, जो स्थान की उपलब्धता और प्रजातियों के चयन पर निर्भर करता है। गड्ढे का आकार 60 सैं.मी. × 60 सैं.मी. × 45 सैं.मी. होना चाहिए। जब ढलान धीमी हो, तो प्रत्येक गड्ढे के पास नीचे की ओर अर्ध–चन्द्राकार खाई–रिज बनाई जाएगी और जब ढलान खड़ी हो, तो आधार पर 45' चौड़ी और नीचे की ओर 45' गहरी समोच्च खाइयों के साथ वृक्षारोपण किया जा सकता है । पौधारोपण के बाद नियमित रूप से खरपतवार हटाएँ और पशुओं से सुरक्षा हेतु बाड़बंदी करें ।

बांस नम मिट्टी पर अच्छी तरह से विकसित हो सकता है, लेकिन उच्च नमी वाली गहरी छिद्रपूर्ण उपजाऊ मिट्टी बेहतर है। बांस के पौधों के लिए 5×4 मीटर की दूरी बेहतर होती है। यदि नदी के किनारों पर कटाव नियंत्रण के लिए बांस लगाना है तो दूरी 3×3 मीटर या 2.5×2.5 मीटर हो सकती है। गड्ढे के आकार के लिए, एक सामान्य नियम के रूप में जितना बड़ा गड्ढा होगा, राइजोम की वृद्धि उतनी ही बेहतर होगी और राइजोम को 60×60×60 सैं.मी. से 100×100×100 सैं.मी. तक के गड्ढों में लगाया जाना चाहिए।

वर्षा ऋतु के दौरान डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन को बनाए रखने के लिए विशेष सावधानी बरतें। पशुशाला को साफ, सूखा एवं हवादार रखें तथा जलभराव न होने दें। पशुओं को संतुलित आहार, पर्याप्त हरा चारा एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराएं। खुरपका–मुंहपका, गलघोटू एवं लंगड़ा बुखार जैसे रोगों से बचाव हेतु समय पर टीकाकरण तथा नियमित कृमिनाशन कराएं। थनैला रोग की रोकथाम के लिए दुग्ध दुहन से पहले एवं बाद में थनों की स्वच्छता बनाए रखें। फफूंदयुक्त अथवा सड़ा–गला चारा खिलाने से बचें तथा अतिरिक्त हरे चारे का साइलेज बनाकर सुरक्षित रखें। किसी भी पशु में बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें। उचित प्रबंधन एवं संतुलित पोषण से पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर रहेगा तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होगी।

मौसम आधारित कृषि सलाह

- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मौसम

पूर्वानुमान आधारित कृषि सलाह सेवाओं का पालन करें और तदनुसार कृषि कार्यों को समायोजित करें, जैसे भारी बारिश का पूर्वानुमान होने पर कृषि रसायन स्प्रे से बचें।

- उच्च तीव्रता वाली वर्षा के दौरान मिट्टी के कटाव को कम करने के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खेतों में सुरक्षित जल निकासी सुनिश्चित करने के लिए उचित घास वाले जलमार्ग/चैनल का निर्माण करें।
- भारी वर्षा के दौरान बाढ़ और कटाव को रोकने के लिए अपशिष्ट या वन भूमि पर भूजल पुनर्भरण को बढ़ाने के लिए परकोलेशन तालाब और खेतों के आसपास नालों के किनारों पर चैक डैम का निर्माण करें तथा मृदा कटाव के कारण होने वाले नुकसान को नियंत्रित करने के लिए राज्य राजमार्गों से अपवाह का भी संचयन किया जा सकता है, जिसे शुष्क अवधि के दौरान का उपयोग किया जा सकता है।
- अपने आस–पास की बंजर भूमि या खेतों से पार्थेनियम खरपतवार को फूल आने से ठीक पहले हटा दें और इसका उपयोग कम्पोस्ट खाद बनाने के लिए करें।
- किसानों को ग्राम पंचायत स्तर पर वृक्षारोपण अभियान शुरू करने की भी सलाह दी जाती है।

निस्पंदन तालाब

चैक डैम

प्रकाशक: विस्तार शिक्षा निदेशालय, डॉ. यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी–सोलन, हि. प्र.
दूरभाष: 01792 252706, 252426, ई मेल: dext@uhf.ac.in
www.uhf.ac.in

सोशल मीडिया में विश्वविद्यालय को करें फोलो